

धोरण : 9

हिन्दी

१४. युग और मे
स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) प्रस्तुत कविता के रचनाकार का नाम बताईए।

►प्रस्तुत कविता के रचनाकार नरेन्द्र शर्मा है।

(2) गगन और धरती से क्या हो रहा है?

►गगन से आग के गोले बरस रहे हैं और धरती से ज्वालाएँ उठ रही हैं।

(3) सत समंदर में क्या हो रहा है?

►सत समंदर में हिंसा की आग से पानी खौल रहा है।

(4) काव्य-शीर्षक का समानार्थी शब्द दीजिए।

►कविता और जमाना

प्रश्न 2. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

(1) बुद्धि और हाथ किस कार्य के लिए हैं?

►बुद्धि का कार्य संसार के अज्ञान को दूर करके यहाँ
छाई जड़ता मिटाना है। हाथों का काम बुद्धि के
मार्गदर्शन में पृथ्वी को स्वर्ग की तरह सुंदर बनाना
है।

(2) ज्ञान और पृथ्वी की कैसी स्थिति हो रही है?

►ज्ञान अपनी गहराई खो रहा है। पृथ्वी दुःख के समुद्र में डूब रही है।

(3) मानव की क्या स्थिति हो गयी है?

►मानव ईश्वर बनने का प्रयास कर रहा था। उसे सारी सृष्टि पर अपना नियंत्रण स्थापित करना था। परंतु आज वह सब छोड़कर अपने ही विनाश में लग गया है।

प्रश्न 3. सविस्तार उत्तर दीजिए :

(1) कवि के हृदय में कैसी व्यथा है?

►कवि संसार में हो रहे संहार के दृश्यों को देखकर बहुत दुखी है। उसे लगता है कि ऐसी स्थिति में उसकी चिंता करनेवाला कोई नहीं है। उसकी करुण कथा को सुनने में किसी की दिलचस्पी नहीं है। कवि अपनी पीड़ा के घुट पी लेने में ही अपनी भलाई समझता है। सारी दुनिया को दुःख में झूबी देखकर वह भी गम के समुद्र में झूब जाना बेहतर मानता है। उसे लगता है कि ऐसी स्थिति में उसका कोई भी निशाना सही बैठनेवाला नहीं है। इस प्रकार कवि के हृदय में घोर दुःख और निराशा है।

(2) 'युग और मैं' कविता का संदेश लिखिए।

► 'युग और मैं' कविता में कवि ने संसार की स्थिति के संदर्भ में अपनी स्थिति देखी है। कवि कहता है कि प्रायः मनुष्य अपनी मामूली पीड़ा को भी बड़ी मानने लगता है। उसे लगता है कि उसके अस्तित्व का कोई महत्त्व नहीं है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि दुनिया की स्थिति देखकर मनुष्य को कभी हताश और निराश नहीं होना चाहिए। उसे आत्मविश्वासपूर्वक पूर्ण जीने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रश्न 4. संदर्भ सहित स्पष्टीकरण दीजिए :

- (1) मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,
काम अधूरा छोड़कर रहा आत्मघात मानव जानी।
सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझसे छूटे तो क्या!**
- प्रस्तुत पंक्तियाँ नरेन्द्र शर्मा की 'युग और मैं' कविता से ली
गई हैं। इनमें कवि ने बताया है कि मनुष्य किस तरह अपनी
प्रगति की राह से भटककर गुमराह हो गया है।

►मनुष्य ने विज्ञान के क्षेत्र में अनोखी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हैं। इन सिद्धियों के बल पर वह स्वयं को ईश्वर समझने लगा। ऐसी सिद्धियोंवाले देश सारी दुनिया पर अपना अधिकार करने के फेर में पड़ गए। उन्होंने ईश्वर बनने की राह छोड़ दी और अपना ही विनाश करने लगे। कवि कहता है कि जब सबने अपनी राह छोड़ दी तो मैं अगर भटक गया तो इसमें मेरा क्या दोष?

(2) जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के?

जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?

सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा !

►प्रस्तुत पंक्तियाँ नरेन्द्र शर्मा, की 'युग और मैं' कविता से ली गई हैं। इनमें कवि ने दुनिया के भविष्य के प्रति निराशा प्रकट की है।

►कवि कहते हैं कि वर्तमान में संसार संहार की वृत्तियों में उलझा है। चारों ओर विध्वंस की स्थिति है। एक-दूसरे पर प्रभुत्व स्थापित करने की होड़ है। ऐसी दशा में मनुष्य की बराबरी की बातें केवल बातें ही रह जाएँगी। जबतक संसार में शांति और भाईचारे की भावना नहीं होगी तब तक मनुष्यता का वातावरण नहीं बनेगा। बिना उसके मानव-मानव की समानता का आदर्श कभी व्यवहार में नहीं आ सकेगा। कवि कहता है कि जब सारी दुनिया गैरबराबरी की पीड़ा से परेशान है तो मैं अपनी पीड़ा की क्यों चिंता करूँ?

प्रश्न 5. विरोधी शब्द लिखिए :

- (1) हस्ती** × नास्ति
- (2) अंगार** × ओला
- (3) समुद्र** × पोखर

प्रश्न 6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द देकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) अनगिनत - असंख्य

वाक्य : आज अनगिनत मनुष्य बेकार हैं।

(2) गगन - आकाश

वाक्य : गगन में बादल छाए हुए हैं।

(3) दुनिया - संसार

वाक्य : दुनिया बहुत बड़ी है।

(4) निखिल - संपूर्ण

वाक्य : निखिल विश्व में कई अजायबियाँ हैं।

(5) तहस-नहस - बर्बाद

वाक्य : दंगे में सारा गाँव तहस-नहस हो गया।

(6) आपा - अभिमान

वाक्य : सुधीर को अपना आपा छोड़ देना चाहिए।

प्रश्न 7. ऐसी स्थिति में आप क्या कर सकते हैं ?

जब मौत सभी को निगल रही हो? चारो ओर अत्र-तत्र सर्वत्र आग लगी हो, हत्याएँ हो रही हों।

- इन तीनों परिस्थितियों में सबसे पहले मैं 108 नंबर डायल करके पुलिस को जानकारी दे दूँगा। इसके अतिरिक्त -
 - जब मौत सभी को निगल रही हो -
जब मौत सभी को निगल रही हो और वह मेरे बस की बात होगी तो मैं सबकी सहायता करूँगा।

►अगर वह मेरे बस की बात नहीं है तो भी मैं भीतर से स्थिर रहकर मेरे हिस्से में मेरा जो भी कर्म होगा, मैं करता रहूँगा। मैं तनिक भी विचलित नहीं हो पाऊँगा।

THANKS



FOR WATCHING